पवित्रता द्वारा सर्व प्राप्तियां...

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि ब्रह्मचर्य से शुरू होकर मन की शुद्धि, स्वप्नों तक भी पवित्रता, दृष्टि भी पवित्र, वृत्ति भी पवित्र, विचार भी पवित्र, वायब्रेशन्स भी पवित्र, कोई व्यर्थ संकल्प नहीं, इसके बहुत सारे लेवल बनाते हैं। जिसका लेवल जितना ऊंचा उठता जाता है। उसका जीवन उतना ही अनुभूतियों की खान बनता जाता है। अब आगे पढ़ेंगे...

प्रभु मिलन की अनुभूति, कर्म क्षेत्र पर रहते हुए सुख-शान्ति की अनुभूति, पवित्रता को सहज अनुभव करने की अनुभूति। अनेक समस्याओं, चिन्ताओं और बाधाओं में सहज ही हल्के रहने की, परमात्म सहयोग की, उसके साथ की अनुभूति, परमात्म प्रेम की अनुभूति, उससे प्राप्त शक्तियों की अनुभूति, उसकी दुआओं की अनुभूति, इन सब अनुभूतियों का आधार मनुष्यात्मा की प्युरिटी है, क्योंकि भगवान परम पवित्र है, पवित्र आत्माएं ही उसको खिंचती हैं और पवित्र आत्मायें ही उसके प्युअर वायब्रेशन्स को खिंचती हैं। पवित्र आत्मायें भगवान को सबसे ज़्यादा प्रिय हैं। जिन्होंने देहधारियों से देह के सम्बन्ध हल्के कर दिए, पवित्रता का नाता जोड़ दिया, जो देह भान से न्यारे होने लगे, वे परमात्मा को भी आकर्षित करने लगे। उन पर उनकी कृपा बरसने लगी। सुख-शान्ति सम्पन्न जीवन हो गया। जीवन में खुशियां छा गई। तो हम ये देख सकते हैं, ये अनुभव कर सकते हैं कि प्युरिटी ही इन सभी प्राप्तियों को अनुभव करने का आधार है। प्युरिटी इस कल्प वृक्ष का भी आधार है। जिस धर्म की स्थापना जब भी हुई तो प्युरिटी से ही प्रारम्भ हुई। धर्म पिता, पवित्र आत्माएं ही आयीं थी। अनेक धर्मों में दिखाया गया, एंजेल्स आये, फरिश्तों ने प्रवेश किया, ज्ञान दिया, ये सब पवित्र आत्माएं थीं। धीरे-धीरे उस धर्म के अनुयायी पवित्रता को भूलते गए। बाहरी सिद्धान्तों में अटक कर रह गए। समय बदला, कई विषयी लोग पैदा हो गए हर धर्म में, उन्होंने धर्म के रूप को विकृत कर दिया और संसार में अब धर्मों की लोवेस्ट स्थिति है। सब आपस में लड़ते हैं। वैमनस्य है, घृणा है, प्रेम नहीं रहा, जबकि सभी यही ज्ञान देते हैं कि तुम रूह हो, तुम आत्मा हो, तुम सोल्स हो, वो तुम्हारा सुप्रीम सोल सुप्रीम फादर है। हम सब उनकी सन्तान हैं। तो एक परिवार हो गया। तो आपस में बहुत ही प्यार होना चाहिए। निश्चित रूप से होना चाहिए। लेकिन पवित्रता की कमी सबको देह भान में ले आई। और सभी सोचने लगे कि मेरा धर्म बड़ा। तुम्हारा झूठा, मेरा सच्चा। ये बिना मतलब के झगड़े प्रारम्भ हो गये। घृणा भाव पैदा हो गया, इनसे बचना है। अब समय आ गया है, सभी आत्माओं को अपनी मूल पवित्र स्थिति में पहुंचना ही है क्योंकि सबके घर जाने का, वापिस परमधाम जाने का, रूहों की दुनिया में जाने का समय आ गया है। तो ये खेल पूरा होने को है। सबके हिसाब-किताब भी यहाँ चुक्तू होंगे। कर्मों का हिसाब-किताब सबको देना पड़ेगा। तब पावन बनकर सब आत्माएं ऊपर जायेंगी। चाहे भगवान के मिलन का अनुभव आप करना चाहते हैं, चाहे जीवन को सुख-शान्ति से भरना चाहते हैं। तो पवित्रता को धारण करें, पवित्रता के लेवल को बढ़ाते चलें। अगर मन में सूक्ष्म में भी अपवित्रता रहेगी, अपवित्र इच्छायें रहेंगी, यदि हम इच्छाओं को दबा कर रखेंगे, उन्हें नष्ट नहीं करेंगे, तो कहीं न कहीं समस्यायें बढ़ेंगी, जीवन में विघ्न आतें रहेंगे। अगर हमारे पास पॉवर ऑफ प्युरिटी है, तो प्रकृति भी हमें सम्पूर्ण मदद करेगी, प्रकृति का सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन की भी कमी नहीं होगी। सुख-शान्ति से जीवन, परिवार भरपूर हो जायेगा।

जिन्होंने देहधारियों से देह के सम्बन्ध हल्के कर दिए, पवित्रता का नाता जोड़ दिया, जो देह भान से न्यारे होने लगे, वे परमात्मा को भी आकर्षित करने लगे। उन पर उनकी कृपा बरसने लगी। सुख-शान्ति सम्पन्न जीवन हो गया। जीवन में खुशियां छा गई। तो हम ये देख सकते हैं, ये अनुभव कर सकते हैं कि प्युरिटी ही इन सभी प्राप्तियों को अनुभव करने का आधार है।

फतेहपुर-बाराबंकी(उ.प्र.)। सीओ जगतराम कनौजिया को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. शीला बहन।

लक्ष्मणगढ़-सीकर(राज.)। नवरात्रि के पावन पर्व पर समाज सेवक रतन चिरानिया को ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अमृता बहन। इस मौके पर ब्र.कु. महेश व ब्र.कु. रमेश भाई भी उपस्थित रहे।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सेंट मैरी चर्च में 'मेडिटेशन ऐज़ मेडिसिन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को ब्र.कु. डॉ. पीयूष रंजन ने सम्बोधित किया। इस मौके पर चर्च के फादर मनोज कुल्लू, फादर अरुल जेयाकुमार, फादर बार्थोलोमेव, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मृदुल बहन, ब्र.कु. अंजलि बहन, ब्र.कु. कुमुद बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

तूंगा-राज.। विश्व यादगार दिवस पर सड़क दुर्घटनाओं में पीड़ितों को शहर के मुख्य मार्ग से कैंडल मार्च निकाल कर ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सूर्य भवन सेवाकेंद्र पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में विशंभर दयाल,सरपंच,तूंगा, मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. ललिता दीदी,बस्सी क्षेत्र संचालिका, ब्र.कु. सुनीता दीदी,स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका, ब्र.कु. लक्षिका बहन, ब्र.कु. अनीता बहन तथा डॉ. ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई सहित अन्य गणमान्य लोग व ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

चक्रधरपुर-झारखंड। ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला में महिलाओं के लिए आयोजित दस दिवसीय 'संतुलित, स्वस्थ, सशक्त पारिवारिक जीवन' विषयक कार्यक्रम के दौरान सहभागी महिलाओं को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह देने के पश्चात् समूह चित्र में पाठशाला संचालिका एवं ब्रह्माकुमारीज़ वुमेन विंग की सदस्या ब्र.कु. मानिनि बहन।

अव्यक्त मुरली 18-01-2001 (पहेली-07)2024 -25

ऊपर से नीचे

1. स्मृति ..... श्रेष्ठ है, जब ब्राह्मण बनें तो बापदादा द्वारा जो जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त किया, वह सेकण्ड की स्मृति द्वारा ही प्राप्त किया। (2)
3. जैसे-जैसे हर बच्चे की विशेषता सामने आ रही थी तो ब्रह्मा बाप के मुख से यही बोल निकल रहे थे ..... बच्चे .....! (2)
6. बच्चों ने एक बार याद दी, बाप पदमगुणा ..... में यादप्यार दे रहे हैं। (3)
8. बापदादा भी बच्चों को सेवा में उमंग-..... से आगे बढ़ते हुए देख हर्षित हो रहे हैं। (3)
9. मन-बुद्धि द्वारा श्रेष्ठ संकल्प और यथार्थ निर्णय शक्ति का ..... स्वरूप में लाओ।(5)
10. हर एक बच्चा ..... की नदी में लवलीन था। (2)
12. कोर्स करने में टाइम लगा लेकिन जब निश्चय हुआ तो कितना टाइम लगा? सेकण्ड का ..... हुआ ना! (2)
14. तो चलते ..... समथ स्वरूम बनो और दूसरों को समर्थी दिलाओ। (3)
16. गुंजार, नाद, आवाज। (2)
17. खोपरा, श्रीफल। (4)
18. गुणगान, यशोगान। (3)
20. 5 ही सांपों को गले की ..... बना दी है? शेश शैया बना दी है, डांस का मंच बना दिया है? (2)
21. इतनी मातायें पवित्रता का व्रत ..... कर देवियों के रूप में वरिवर्तन हो गई।(3)

बायें से दायें

1. " मैं बाबा का और बाबा मेरा", इस स्मृति द्वारा ही जन्म सिद्ध अधिकार के.....बनें।(4)
2. जिज्ञासु बढ़ायें, ... बढ़ायें यह तो कॉमन है, लेकिन हर एक आत्मा को बाप की मदद से शक्तिशाली बनायें, अभी इसकी आवश्यकता है।(4)
4. मध्य बिंदु, मध्य भाग।
5. साकार रूप में सेवा के निमित्त बनने का ताजपोशी वा ..... का दिवस है।(3)
7. जैसे ही ब्रह्मा बाप वाह बच्चे वा शाबास बच्चे कह रहे थे ऐसे ही सभी बच्चों के नयनों से प्रेम की ....., जमुना निकल रही थी। (2)
8. बापदादा ने सभी को यही वरदान दिया सदा सर्व शक्तियों में जीते रहो, ... रहो।(3)
9. हवा, पवन (2)
11. अच्छा सेवा का ..... छतीसगढ़ इन्दौर जोन का है:- सभी ने बहुत दिल से सेवा की। (2)
13. कोई सागर में लहरों में लहरा रहे थे, कोई पहाड़ी पर बैठे हुए थे, कोई बगीचे में घूम रहे थे, तो आज वतन में अव्यक्त रचना की ..... थी।(4)
15. अगर ईश्वरीय.....की लकीर से बाहर जाते हैं तो फकीर बन जाते है।(3)
16. बापदादा ने उन ..... को सौगात दी, बहुत सुन्दर बेदाग हीरे का बहुत चमकता हुआ कमल पुष्प था।(2)
17. बेड़ा, नौका। (2)
19. जिन्होंने भी जो कुछ दिल से और शक्तिशाली होके किया है, उन्हों का एक का लाख गुण नहीं लेकिन पदमगुणा ..... है।(2)
22. डर, खौफ। (2)
23. जब यह माला पहनते तब बाप की माला में ..... अच्छे में नजदीक मणके बनते हैं। (3)
24. जैसे आज के दिन बच्चे विशेष चारों ओर ब्रह्मा बाप की याद में रहते हैं, ऐसे विशेष ब्रह्मा बाप भी बच्चों के ..... में लीन रहते हैं। (2)

06/24- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 31-12-2000)

ऊपर से नीचे: 2. भाषण, 3. विदेश, 5. कदम, 9. माने, 10. महादानी, 11. अटल, 12. नजर, 13. पास, 14. चला, 16. गुणदानी, 18. गार्डन, 19. चित्र, 20. रिद्धि।

बायें से दायें: 1. शोभा, 3. विधि, 4. संकल्प, 6. पदम, 7. निर्माण, 8. शमा, 11. अर्जुन, 15. सजनी, 16. गुलाब, 17. ऋण, 18. गाना, 20. रिगॉर्ड, 21. पत्र, 22. ज्ञानी।